वर्ष : 4 अंक : 4 मार्च 2020 जोधपुर (राजस्थान) मूल्य : 25 रुपए

समराथल न्यूज पोस्ट

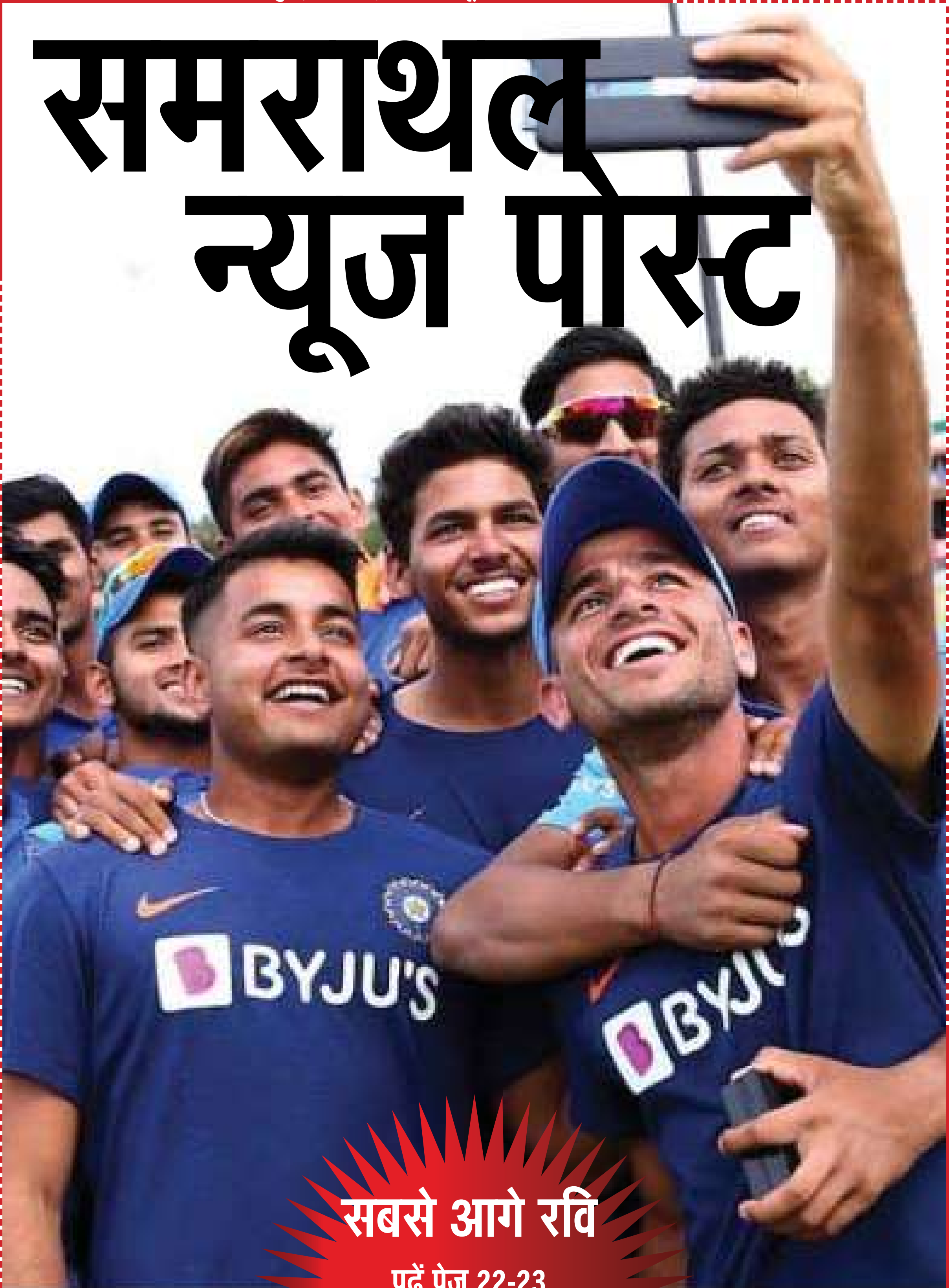

सबसे आगे रवि

पढ़ें पेज 22-23

With Best Compliments From .....

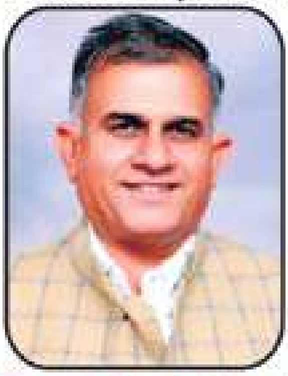

Devendra Bishnoi

Secretary-All India Bishnoi Mahasabha

Yashpal Bishnoi

DEVENDRA GROUP

- Devendra Infraprojects Pvt. Ltd.
- Devendra Construction Company
- Nageshwar Construction Company
- Sunil Construction Company
- Shri Hari Construction Company

H.O. : 41-B, Umaid Bhawan Road, Near Sun City Art Emporium, Jodhpur (Raj.)

B.O. : 'The Orient' Plot No. 7, Jai Ambey Colony, Civil Lines, Jaipur (Raj.)

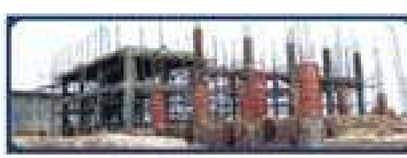

◆Tel : 0291-2510080 ◆ Fax : 0291-2514899 ◆ Mob. : 9414128780, 9414474830

◆E-mail : devjiburia@gmail.com ◆ f : www.facebook.com/Devendrabishnoi29

29 धर्म की आखड़ी, हिरदे धरियो जाय।
जांभोजी किरपा करी, नाम विश्णोई होय।।

समराथल न्यूज पोस्ट

समराथल न्यूज पोस्ट वर्ष : 4 अंक : 4 मार्च 2020 जोधपुर(राज.) | पेज-3

samrathal.newspost@gmail.com

विषय अनुक्रमणिका

पहली बार अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने साधु संतों के आचरण पर कार्रवाई की, अब वे क्या कर रहे हैं पढ़िए

पेज 6 से 9

Pg 12

हिसार : सड़क पर आई चौधराहट

» नेताजी...कैडर वाले विधायक 05
» महासभा की कार्रवाई के बाद कहां हैं संत 6-9
» सकपण की कला के अनूठे कारीगर 08
» महासभा की कार्रवाई को दी कोर्ट में चुनौती 09
» महाकवि सुरजनदास पूनिया का परिचय 10
» ग्रेट लीडर्स...स्व. रामसिंह विश्नोई का किस्सा 13
» जीव हत्या जारी, नागौर-बीकानेर प्रकरण 14
» मुकाम मेले में लगे मोदी-मोदी के नारे 16
» महासभा ने किया मुख्यमंत्री का अभिनंदन 17
» चौधरी जाणे...सकपण री कला 19
» सबद... ओउम् अइया लो अपंर पर बाणी 20

Pg 22

क्रिकेट : रवि विश्नोई ने वर्ल्ड कप में मचाई धूम

शहीद शैतानसिंह के हत्यारों को मिला संदेह का लाभ

पेज-15

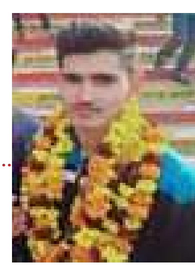

ग्रेट प्लेयर श्रीगंगानगर का एथलीट बना चैंपियन

पेज-18

समराथल न्यूज पोस्ट

मासिक समाचार पत्रिका

ओमप्रकाश
संपादक-प्रकाशक

सुरेशकुमार लोल
मुख्य संपादक 9166630130

सुनील कांवा
प्रबंधक
9001800789

कार्यालयः प्लॉट नं. 30, थोरियों की ढाणी, पाल बालाजी, पाल रोड, जोधपुर राजस्थान

9166630130
samrathal.newspost@gmail.com

मूल्य/एक प्रतिः 25 रुपए
वार्षिकः 200 रुपए

समराथल न्यूज पोस्ट में प्रकाशित सामग्री में प्रस्तुत रचनाएं, लेख लेखकों व रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। इनसे संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं है। विचारों से संबंधी आपत्तियों के लिए लेखक ही उत्तरदायी है। इस बारे में उनसे संपर्क किया जाए।

सभी प्रसंगों का न्याय क्षेत्र जोधपुर रहेगा।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक ओमप्रकाश द्वारा माणक ऑफसेट प्रिंटर्स, एमजीएच रोड, जोधपुर से मुद्रित तथा प्लॉट नंबर 30, थोरियों की ढाणी, पाल बालाजी, पाल रोड, जोधपुर राजस्थान से प्रकाशित

RNI. No. RAJMUL/2016/70544

संपादक-ओमप्रकाश

बाहर से आकर आपको कोई नहीं जगाएगा, बदलाव का वक्त है यह

निवण प्रणाम.

पिछले कुछ महीनों में हमारे इर्दगिर्द झकझोर देने वाले कई घटनाक्रम हुए हैं, जो सोचने को मजबूर कर रहे हैं। बावजूद इसके 99 प्रतिशत तबका यह देख रहा है कि इन मुद्दों पर सोचने की पहल मैं नहीं मेरा पड़ोसी या कोई दूसरा करे, तो यह संभव नहीं है। अब वह वक्त नहीं कि आपको कोई दूसरा आकर जगाए कि आप अब पहल कर सकते हैं या इसके करने का यह सही समय है। ऐसी सलाह सिर्फ मन का आभास हो सकता है। दुनिया अपनी जड़ों को मजबूत करते हुए समय के साथ बदलाव ला रही है जबकि समाज में इसकी उलट तस्वीर है। इच्छाशक्ति में घोर कमी दिख रही है। इसके परिणामस्वरूप ही संतों के आचरण पर अंगुली उठ रही है। कुछ तथाकथित संत तो इस रास्ते पर बहुत आगे निकल गए हैं, जिससे सबको शर्मसार होना पड़ा। पूरी दुनिया ने कलंकित करने वाले वीडियो व फोटोग्राफ्स देखे। इस मामले में समाज व संतों ने महज कार्रवाई के नाम पर औपचारिकता की रस्म निभाई, यह नहीं देखा कि अब इसकी पालना हो रही है या नहीं। सुनने में आ रहा है कि आचरण के विपरीत काम करने वालों पर कार्रवाई का कोई असर नहीं है। कुछ ने नए गुरु धारण कर वापस धार्मिक कार्य संपन्न करवाने शुरू कर दिए हैं तो कोई बड़े संतों के साथ मंच साझा कर रहे हैं। ऐसे में न केवल यह सवाल उठ रहा है कि यह सब दिखाने की क्या जरूरत थी बल्कि सवाल यह भी है वे समाज को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं। समाज के लोग धर्म सुधार के नाम पर साधुओं से कथा प्रवचन करवा रहे हैं, उन पर लाखों रुपए खर्च कर रहा है। यही पैसे शिक्षा व स्वास्थ्य पर खर्च किए जाने चाहिए। इसी तरह वन्यजीवों के बढ़ते शिकार प्रकरणों में समाज धरना प्रदर्शन तक सीमित है। किसी संस्था का कोई रिसर्च वर्क नहीं है, जो संबंधित अथॉरिटी के सामने रखा जा सके। लूणकरणसर में 40 हिरणों का शिकार हो नागौर या फिर तालछापर में वन्यजीव सुरक्षा चौकी कर्मचारियों द्वारा मांस पकाना। महज प्रेस नोट जारी करने से न तो वन्यजीव बचाए जा सकेंगे और न आरोपियों के खिलाफ कुछ कार्रवाई हो पाएगी। इसलिए जरूरत इससे कहीं आगे जाकर सोचने व उस पर अमल करने की है। कुछ ऐसे ही हालत सामाजिक ताने बाने के हैं। 29 नियमों की पालना से ज्यादा महत्व दिखावे को दिया जा रहा है। कभी प्रेम व रिश्तों की प्रगाढ़ता बड़ी ताकत होती थी। अब परिवारों में वह प्रेम नहीं रहा। रिश्ते भी धन देखकर किए जा रहे हैं। जो पहले हो गए थे, उन्हें भी धन की ताकत से तोड़े जा रहे हैं। माना कि शिक्षा व रोजगार के कारण टूटते रिश्तों की संख्या बढ़ रही है लेकिन बड़ा कारण बच्चों में संस्कार की कमी है। नई पीढ़ी 29 नियमों से ज्यादा सोशल मीडिया पर ध्यान दे रही है। लंबे समय बाद इसका धीरे-धीरे असर होने लगा है। एक समय आएगा जब विश्नोई की अलग पहचान संकट में पड़ जाएगी, जैसा भारत के कई प्रदेशों में पड़ भी गई है। वहां के लोगों को देखकर अलग ही छवि उभर आती है। 29 नियमों में समाज को एकता के धागे में इस कदर पिरोकर रखने की ताकत है कि तीखी से तीखी कैंचियां भी काट नहीं सकती। हमारे पूर्वजों ने ऐसा करके दिखाया है। इसलिए इसमें जरा सा भी संशय नहीं।

- ओमप्रकाश

कैडर वाले विधायक

एक विधायक महोदय कैडर को लेकर खूब चर्चा में हैं। यह चर्चा हर किसी की जुबान पर आ ही जाती है। अब स्थिति यह है कि इससे विधायक को भी ऐसी आदत हो गई है कि वे भी कई बार बातों ही बातों में बोल देते हैं कि वह विधायक कैडर का आदमी है। ऐसे में उनसे इसी कैडर को ध्यान में रखकर बात की जाए। हालांकि बहुत ही साधारण परिवार से ताल्लुक रखते हैं। ये विधायक पहली बार एक प्रदेश की विधानसभा में पहुंचे हैं। उस प्रदेश में पांचवीं सबसे बड़ी जीत में इनकी जीत भी शामिल है। जब ये जीतकर विधानसभा पहुंचे तो जनता की उम्मीदें परवान पर चढ़ गई थी। इन उम्मीदों को पूरा करवाने व जनसमस्याओं के निराकरण में ये टॉप टेन की लिस्ट में शुमार करते हैं। वे खुद को मुख्यमंत्री के खास बताने में भी वे गुरेज नहीं करते। कहते हैं कि मैंने मुख्यमंत्री से आपके लिए यह-यह करवाया। यह सुन लोग भी वापस कहने से नहीं चूकते कि आपका तो कैडर ही अलग है। फिर अब काम नहीं होंगे तो कब होंगे।

आपने कौनसा हमसे पूछा था

बात लोकसभा चुनावों के दौरान की है लेकिन गाहे-ब-गाहे सामने आ जाती है। एक बड़े नेता के पुत्र को चुनाव जिताने के लिए समाज के कुछ नेताओं ने पूरा जोर लगाया। हालांकि वे युवाओं को प्रभावित नहीं कर सके। ऐसे में किसी गांव में बड़े नेताजी के पुत्र मुकाबले में नहीं आ पाए थे। चुनाव बाद रात गई बात गई वाली स्थिति होनी थी लेकिन बड़े नेताजी के पुत्र की हार अब तक समाज के नेताओं का पीछा नहीं छोड़ रही। कोई जनसभा हो या वैवाहिक समारोह में इसकी हथाई हो ही जाती है। इसी चर्चा के दौरान कुछ विधायक व महासभा के पदाधिकारी लोगों को ताना मारने से नहीं चूकते कि बड़े नेता ने कितने लोगों को विधायक के टिकट दिए थे आपने वह अहसान उतारने नहीं दिया। अगर एक जगह मोदी को वोट नहीं देते तो क्या हो जाता, यह सुनकर सामने वाला भी जवाब में देर नहीं करता कि इस नेता पुत्र को मैदान में उतारने व समर्थन देने से पहले आपने कौनसा हमसे पूछा था।

विधायक प्रतिनिधि की 4 साल पहले से ही तैयारी

राजस्थान में कांग्रेस सरकार को एक साल ही पूरा हुआ है। अगले चुनावों में चार साल बाकी है। वहीं, एक विधानसभा क्षेत्र से एक युवा नेताजी अभी से चुनाव लड़ने की तैयारी करने मैदान में उतर गए हैं। राजनीतिक घराने से ताल्लुक रखने वाला यह युवा गांवों में वैवाहिक समारोहों, शोक सभाओं व अन्य आयोजनों में दिखाई दे ही जाते हैं। खेल प्रतियोगिताओं के उदघाटन व जायजा लेने में तो वे विधायक से भी आगे पड़ते हैं। इनके परिवार की पहचान से ही उनका परिचय होता है। वर्तमान में भी एक विधायक इनके परिवार के हैं। किसी गांव में हुए एक कार्यक्रम में किसी बुजुर्ग ने पूछ लिया कि ये भाई कौन है? इस पर पास बैठे लोगों ने कहा कि ये विधायक प्रतिनिधि है। यह बात अलग है कि विधायक ने उन्हें कभी अपनी जगह भेजा या नहीं, इसकी खबर जानकारों को सब है। सूत्रों की माने तो विधायक भी नहीं चाहते कि ये मेरा प्रतिनिधि बनकर क्षेत्र में जाए और मेरे ही फील्ड पर बेटिंग करना शुरू कर दे। उन्हें अपने जमे जमाए खेल बिगड़ने का डर भीतर ही भीतर सता रहा है लेकिन साथ ही वे निश्चित है कि आने वाले चुनावों में भी मैनेज कर लेंगे।

शुद्धीकरण का आंधळघेटा

महासभा की कार्रवाई झेलने वाले साधु अब कहां हैं और क्या कर रहे?

हे म्हारा महाराज...

रिपोर्ट...
सुरेशकुमार लोल. बिलाड़ा
9166630130

पिछले वर्ष सोशल मीडिया पर आए कई साधु महात्माओं के कुछ आपत्तिजनक फोटो के बाद अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने मुकाम में बैठक बुलाकर धार्मिक मान्यताओं व चरित्र के खिलाफ आचरण का आरोप लगाकर आठ साधुओं पर कार्रवाई की। इसके तहत उनसे भगवा व दीक्षा वापस ले ली गई। यानी उसके बाद वे सामाजिक व धार्मिक कार्यों का निष्पादन नहीं कर सकते। इस निर्णय में समाज के तमाम बड़े संतों की सहमति थी। उनसे राय लेने के बाद ही यह कार्रवाई की गई। इसे समाज में सुधार का एक बड़ा कदम बताया गया लेकिन बताया जा रहा है कि बिश्नोई महासभा की कार्रवाई अब शून्य घोषित होने की स्थिति में आ गई है। क्योंकि उन साधुओं ने वापस धर्म कर्म की राह पकड़ ली है। किसी ने नया गुरु बनाकर चळु पाहळ ले लिया और अब खुद जागरण व हवन आदि का काम कर रहे हैं तो कोई कथा में हिस्सा ले रहा है। समराथल न्यूज पोस्ट ने इन साधुओं की दिनचर्या की पड़ताल की तो चौंकाने वाली स्थिति सामने आई। किसी साधु पर संत समाज व बिश्नोई महासभा की कार्रवाई का असर नहीं है। **पढ़िए...**

आत्मानंद: नया गुरु धारण कर वेदप्रकाश बन गए

जोधपुर जिले के लांबा गांव में रहते हैं। इन पर पहले हिसार में छात्रा से दुष्कर्म के मामले में भी आरोप लगे थे। बिश्नोई महासभा की कार्रवाई के बाद इन्होंने संत रामप्रकाश को अपना नया गुरु बना लिया। इसके साथ ही साधु जीवन की दूसरी पारी शुरू कर दी। अब वे चळु पाहळ और तमाम धर्म संस्कार के कार्य कर रहे हैं। कुछ दिन तक कई लोगों को जरूर अटपटा लगा लेकिन विरोध किसी ने नहीं किया। महज एक महीने में ही उन्होंने अपना प्रभाव जमा लिया। आत्मानंद व विधानंद दोनों गुरु भाई होने के इनकी हरियाणा की एक लड़की को शादी का झांसा देकर दुष्कर्म का आरोप लगने एवं हरियाणा पुलिस में मामला दर्ज होने पर गिरफ्तारी भी हुई। जेल से छूटने के बाद भागीरथदास आचार्य का शिष्य बन लांबा में दो साल से रह रहा। हरियाणा केस बनी बहिष्कृत की वजह। बहिष्कृत के बाद लांबा गांव में रहने से गांव में लोगों में रोष और समर्थन दोनों दिखाई दे रहा है।

रामेश्वरदास बिश्नोई धर्मशाला का संचालन कर रहे

ये जोधपुर स्थित बिश्नोई धर्मशाला में रहते हैं। यह धर्मशाला जाजीवाल धोरा के संत भागीरथदास आचार्य की देखरेख में संचालित है। रामेश्वरदास महाराज पहले जागरण व कथा आदि में जाते थे लेकिन अब ज्यादातर धर्मशाला में ही रहते हैं। हालांकि हाल ही में भेड़ गांव में आयोजित जांभाणी हरिकथा में स्वागी भागीरथदास आचार्य के साथ मंच पर दिखे। बिश्नोई महासभा की कार्रवाई का असर सिर्फ इतना दिखाई दिया कि जागरण आदि में जाना कम कर दिया है। धर्मशाला में होने वाले कार्यक्रमों में वे शामिल होते हैं। स्थानीय लोगों को आपत्ति नहीं है।

सुंदरदासः चर्चा कि कभी अहमदाबाद कभी पुणे

लोहावट एरिया में स्थित कुशलावा गांव के रहने वाले हैं। यहीं गांव में मंदिर के संत प्रेमदास महाराज ने शिष्य बनाया। इसके बाद संत भागीरथदास आचार्य के शिष्यों के साथ रहने लगे। एक अश्लील वीडियो से भूचाल आया था। बताया जा रहा है कि उस वीडियो में ये एक महिला के साथ आपत्तिजनक अवस्था में दिखाए दे रहे थे। हालांकि यह कहना अभी जल्दबाजी होगा कि ये वीडियो इनका ही था लेकिन बिश्नोई महासभा ने इसी आधार पर कार्रवाई की। तब से ये गायब हैं। कोई बता रहा है कि ये अहमदाबाद में है तो कोई कह रहा है कि पुणे व मुंबई में है। पहले कुशलावा आश्रम में रहते थे। इनका जन्म भी इसकी गांव में हुआ था। 2017 में कुशलावा आश्रम से चोरी करने वह आचरण खराब होने पर गुरु प्रेमदास द्वारा भगवा छीन कर आश्रम से बाहर कर दिया। आश्रम से बेदखल होने के बाद वे जाजीवाल धोरा आश्रम पर पहुंच गए। यहां भविष्य में गलती नहीं करने व 29 नियमों पर चलने के वादे पर स्वामी भागीरथदास आचार्य ने शिष्य बनाकर वापस संत समाज में प्रवेश कराया लेकिन ताजा प्रकरण की शुरुआत इन्हीं के आपत्तिजनक फोटो से हुई।

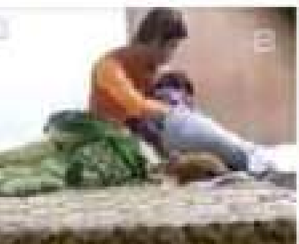

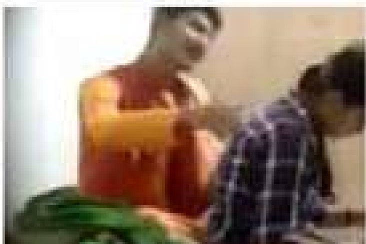

कल्याणदासः ठगी के आरोप में कभी जेल कभी बाहर

मुक्तिधाम मुकाम निज मंदिर के पुजारी रहे हैं। यहां रहते सेना में भर्ती का झांसा देकर लाखों रुपए ठगी करने के आरोप में पुलिस ने पकड़ा। पिछले दिनों एक थाना पुलिस ने और गिरफ्तार किया। बिश्नोई महासभा की कार्रवाई के बाद इनके जीवन पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। भगवा वस्त्र धारण किए हुए हैं। हालांकि, उनके खिलाफ कार्रवाई भी इसलिए की गई थी कि उनकी गिरफ्तारी से समाज को बदनामी सहनी पड़ी। अब ये धार्मिक कार्यक्रमों में नहीं दिखाई देते। उनके खिलाफ नोखा पुलिस थाने में 4 चार लाख रुपए एंठने का मामला दर्ज है। भोजासर कालीराणा नगर निवासी भोमाराम पुत्र पूनमचंद बिश्नोई ने नोखा थाना में मुकदमा दर्ज करवाकर कल्याण दास व महेंद्र पर आरोप लगाया है कि इन्होंने नौकरी दिलाने के बहाने विश्वास में लिया और उसके लिए चार लाख रुपए मांगे। लेकिन न नौकरी मिली और न ही पैसे वापस मिले। पुलिस ने मामला धारा 420 465 467 468 471 406 120 बी भादस में दर्ज किया। पुलिस के अनुसार यह मामला मुकाम गांव में 25 सितंबर 2016 का है। जांच के बाद पुलिस ने 17 माह से फरार चल रहे लिखमीसर (पीलीबंगा) निवासी कृष्णलाल गोदारा उर्फ कल्याणदास 'महाराज' को गिरफ्तार कर लिया।

बलदेवानंदः आचरण सुधार ही रहे थे कि...

स्वामी भागीरथदास आचार्य के शिष्य रहे हैं। इनके भी एक महिला के साथ कुछ फोटो वायरल हो गए थे। तब इनकी ओर से बताया गया कि वह धर्म बहन है। महिला ने भी उन्हें भाई ही बताया। फोटो वायरल करने वालों के खिलाफ जोधपुर के एक थाने में मुकदमा दर्ज कराया था। बलदेवानंद पहले भोजासर स्थित शहीद शैतानसिंह गोशाला आश्रम में रहते थे। इन्हें पहले दो साल के लिए अपने आचरण में सुधार की चेतावनी की कार्रवाई की थी। इतने में सुंदरदास प्रकरण की चपेट में आ गए।

आत्मप्रकाश व रघुवरदयालः लाइव करते रहे हैं कार्यक्रम

एक मुकाम व दूसरे चूरू के तालछापर में रहे हैं। मुख्य धारा से साइड करने के बाद बताया जा रहा है कि सोशल मीडिया पर लाइव आते थे। खुद को बेगुनाह बताते रहे हैं। एक के ऊपर मादक पदार्थ की तस्करी का आरोप लगाकर कार्रवाई की गई। दूसरे के खिलाफ कोई बड़ी वजह सामने नहीं आई। हालांकि ये मारवाड़ एरिया में कभी कभार ही आते थे। ऐसे में बहुत से लोग उन्हें जानते तक नहीं। ना ये कभी ज्यादा कथा आदि के आयोजनों का हिस्सा रहे हैं।

विद्यानंदः नाम के विपरीत आचरण, फिलहाल जेल में बंद

2017 से हिसार जेल में बंद है। इन पर एक छात्रा को शादी का झांसा देकर हरिद्वार में दुष्कर्म करने का मामला है। इनके साथ आरोप आत्मानंद पर भी थे। लेकिन उनका सीधा इन्वॉलमेंट नहीं होने कारण बाहर आ गए। यह प्रकरण चर्चित हुआ था। इसके बाद समाज में आचरणहीन संतों के खिलाफ कार्रवाई की मांग उठी। इन पर भी कार्रवाई की गई थी। बिश्नोई महासभा की ताजा कार्रवाई में और स्पष्ट किया गया था। जबकि आत्मानंद ने वापस धर्म संस्कार के काम शुरू कर दिए।

लालदास धवाः महासभा की कार्रवाई को कोर्ट में चुनौती दी

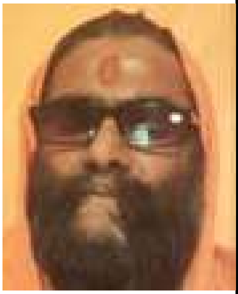

जोधपुर जिले के धवा गांव स्थित जंभेश्वर भगवान के मंदिर में रहते हैं। महिलाओं के खिलाफ अशोभनीय भाषा के इस्तेमाल का एक ऑडियो वायरल होने पर इनके खिलाफ कार्रवाई की गई थी। इनके खुद के भी आपत्तिजनक फोटो वायरल हो गए थे। ये आज भी खुद पर हुई कार्रवाई को सही नहीं मानते। इन्होंने जोधपुर महासभा के अध्यक्ष नारायण डाबड़ी सहित बैठक में उपस्थित रहे कई लोगों के खिलाफ पुलिस में मामला दर्ज करा दिया। अब यह प्रकरण कोर्ट में चल रहा है। मार्च 2019 में बलदेवानंद के गलत आचरण का प्रकरण सामने आने के बाद लालदास का एक ऑडियो वायरल हुआ था। जिसमें लालदास ने मर्यादा के विपरीत भाषा बोल रहे थे। जिससे समाज में रोष फैला व जोधपुर के रातानाडा विश्नोई धर्मशाला में हुई समाजिक बैठक में लालदास को समाज से बहिष्कृत कर दिया था। बहिष्कृत को नकारते हुऐ लालदास की ओर से मुकदमा कराया गया, अब यह मामला न्यायालय में विचाराधीन है। साधु संतों के आचरण को लेकर 26 नवबंर को मुकाम में महासभा की बैठक आयोजित की गई। इसमें संत भी शामिल हुए। इसी बैठक में लालदास को भी बहिष्कृत किया गया। इस कार्रवाई को भी इन्होंने सही नहीं माना लेकिन खुद के आपत्तिजनक फोटो वायरल होने के बाद बचाव की मुद्रा में आ गए। हालांकि बताया जा रहा है कि धवा मंदिर में ही रह रहे हैं।

विश्नोई महाकवि: सुरजनदासजी पूनिया

वील्होजी ने 1673 में बनाया था रामड़ावास धाम का महंत

वील्होजी के सात प्रमुख शिष्यों में सुरजनदासजी पूनिया का महत्व एवं स्थान सर्वोपरी है। वील्होजी के सभी शिष्यों में आप सर्वाधिक प्रतिभासम्पन्न एवं शास्त्रीय ज्ञान-सम्पन महात्मा थे। आपका जन्म सम्वत् 1640 अनुमानित किया जाता है। सम्वत् 1673 में वील्होजी ने अपने वैकुण्ठवास से कुछ समय पूर्व आपको रामड़ावास का महन्त नियुक्त किया था। आपका देवलोकगमन वि. सं. 1748 (सन् 1691ई.) में जाम्भोलाव पर हुआ माना जाता है। वहां से आपके पंच भौतिक देह को पैतृक गांव भींयासर में लाकर समाधिस्थ किया गया। वहां पर बना चबूतरा (छतरी) संत-महात्मा के दिव्य जीवन की गाथा कह रहा है।

शैशव से ही आपकी प्रवृति वैष्णव भक्ति की ओर थी। मन में वैराग्य का उदय हुआ और आप छोटी उम्र में ही वील्होजी को गुरू धारण करके विष्णु अवतार गुरु जाम्भोजी की भक्ति में लीन हो गये। आप सदैव आत्म प्रशंसा से दूर रहने वाले, प्रतिभा सम्पन, सिद्ध-साधु, वितरागी महापुरुष माने जाते थे। संतकवि साहबरामजी राहड़ के अनुसार ये योगी, कवि, पण्डित, बहुज्ञानी एवं स्वर ज्ञान के परम ज्ञाता तथा सुरजनजी व केसोजी गुरु जाम्भोजी के प्रिय मन रूप माने जाते थे। आप सरल स्वभाव के महात्मा और एकान्त प्रिय भी थे। रामड़ावास से 5 किलोमीटर दूर द.-पू. में आपका साधना स्थल वर्तमान में सुरजनाडी सुरजनजी की छाण के नाम से प्रसिद्ध है। लोग इस स्थान को छाण नाडी भी कहते हैं। जाम्भोजी की महिमा गाने में आप सबसे आगे रहते थे। वील्होजी का जीवन-चरित्र पुस्तक में ब्रह्मानंद के अनुसार वील्होजी के देहान्त के समय विश्नोई पंथ के सुधार एवं प्रचार का कार्य अपने सब शिष्यों में से योग्य, विचारशील तथा तितिक्षु समझकर उन्हें ही सौंपा था।

पौराणिक पद्धति पर रचित जाम्भोलाव महात्म की कथा के मूल वक्ता सुरजनदासजी ही थे। विश्नोई पंथ में सूतजी की उपाधि से सम्मानित एवं सूजोजी नाम से आप विश्नोई पंथ में ही नहीं संत साहित्य के समस्त विद्वानों एवं अन्य पंथ-सम्प्रदाय के लोगों के हृदय में भी विराजमान है।

आप के जीवन से जुड़ी अनेक चमत्कारिक कथाएं इतिहास प्रसिद्ध है। आपने सत्रहवीं शताब्दी के मरूदेशीय लोक-मानस की समग्रता को आत्मसात करके उसको नाना प्रकार के मोहक रंगो से चित्रित किया है। आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से समकालीन तथा परवर्ती अनेक कवियों और साहित्यकारों को प्रेरणा मिलती है। सच्चे अर्थों में आपकी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के जाज्वल्यमान सितारे एवं जाम्भाणी साहित्य के आधार स्तम्भ हैं। हिन्दी भक्तिकाल में संत कवि महात्मा तुलसीदास के समकक्ष आपका स्थान माना जाये तो भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

कृतित्व

साखियां: आपकी छंदा और कणा की नौ साखियां हैं, जो राग-धनासी, मारू और सोरठि में गेय हैं। इनमें जाम्भोजी के जन्म, महिमा, गुणों, कार्यों, पंथ प्रवर्तन, सच्चे विश्नोई के लक्षण और विष्णु नाम स्मरण का संदेश है।

डिंगल गीत : आपके पच्चीस डिंगल गीत हैं, जो दोहा छंद में लिखे हैं, जिनमें आठ गीत हरजसों में भी शामिल हैं। ये गीत आत्म-निवेदन, हरि-महिमा, श्रीकृष्ण-रूकमणी, राम-लक्ष्मण आदि से सम्बन्धित हैं।

हरजस: आपके अड़तालीस हरजस है, जिनमें आठ-डिंगल गीत भी शामिल है। ये हरजस राग-आसा, विलावल, भैंरूं, सोरठ, धनांसी, मारू, गबड़ी केदारो, मलार और खंभावची में गेय हैं। आपके हरजस गहन आध्यात्मिक ज्ञान और स्वानुभूति का प्रतीक है। इनमें आपने सहज रूप में समाणे और गिगन दवार में बैठने का अपना प्रमुख अनुभव बताया है। आपके एक गूढार्थ से आपके गहन आध्यात्मिक ज्ञान का भी पता चलता है।

साखी अंग चेतन: आपके 176 फुटकर दोहों का विषय चेतन और अंग से है, इस कारण ही इसका नाम साखी अंग चेतन है- हरि, गुरु, जीव, मन भक्ति, साधु, नीति और आचार-विचार ही इस रचना की विषय वस्तु है।

दस अवतार रा दूहा: जैसा रचना के नाम से ही स्पष्ट है, इसमें दस अवतारों का वर्णन है। इसमें तीन दोहे, तेरह मोतीदाम और चार कवित हैं।

अश्वमेघ यज्ञ रा दूहा: इस रचना में हस्तिनापुर के राजा युधिष्ठिर द्वारा आयोजित अश्वमेघ यज्ञ का वर्णन हैं। इसमें 45 दोहे है।

सुरजनजी के छंदः परमानन्दजी के पोथे में संकलित इस रचना में बेअखरी, मोतीदास, कवित, गाथा, इन्दव, दोहा आदि 73 फुटकर छंद है, जिनमें सृष्टि की उत्पति, जाम्भोजी की महिमा, बैकुण्ठ के सुख आदि बातों का उल्लेख है।

सुरजनजी के कवितः आपके 336 फुटकर कवित मिले हैं, अभी और भी मिलने की आशा हैं। आपकी विविध रचनाओं में भी अनेक कवित है, इतने अधिक कवित अन्य किसी विश्नोई कवि के नहीं मिले हैं। आपके कवित कवि गद के कवितों के अधिक नजदीक है। सम्भवतः कवि गद से आपका मेल हुआ होगा। इस कारण ही आपने अपनी प्रसिद्ध रचना कथा हरिगुण में हरि भक्त कवियों की सूची में कवि गद का नाम सर्व प्रथम लिखा है। हो सकता है गद कवि भी विश्नोई पंथ से प्रभावित हुआ हो। आपके कवित में अनेक विषय है, इनमें पौराणिक ऐतिहासिक अर्द्ध ऐतिहासिक नामात्मक आदि कवित प्रसिद्ध है।

कवित बावनीः अक्षर बावनियों की रचनाओं में आपकी कवित बावनी का विशेष स्थान हैं यह अध्यात्म और नीति सम्बन्धी 30 कतितों की रचना है इसमें वर्ण माला के 28 अक्षरों का निषेधात्मक, आदेशात्मक तटस्थात्मक रूप से नीति और अध्यात्म का वर्णन है।

सवइथैः यह आपकी 30 फुटकर सवइये की रचना है, जिसमें मन, अहंकार हरि महिमा शरीर की नश्वरता और नीति परक बातों का वर्णन है। लौकिक जीवन में प्रचलित सवइया एक ज सुख निरोगी काया दूजो सुख खरचण ने माया भी विश्नोई कवि सुरजनदासजी का ही है।

कथा चेतनः दोहे चौपइयों की इस रचना में मोक्ष प्राप्ति के लिए चेतावनी परक बातें इनमें मन, वचन और कर्म से गुरू आज्ञा का पालन और सुकृत का संदेश है।

कथा चितावणीः यह 25 दोहे चौपइयों की एक लघु रचना है। कवि उदोजी नैण ने भी ऐसी रचना ग्रभ चितावणी लिखी थी। बाद में अनेक भक्त कवियों ने भी ऐसी चेतावणियां लिखी है। गर्भवास बचपन युवास्वथा आदि में किये गये अज्ञान पूर्ण कार्यों और दुःखों का इसमें वर्णन है।

कथा धरमचरीः 80 दोहे चोपइयों की यह रचना मनुष्य को धर्म करके मोक्ष प्राप्त करने का संदेश देती है। अनेक पौराणिक, इतिहासिक सामाजिक और सामयिक व्यक्तियों का इसमें नामोल्लेख है, जो धर्माचरण के फलस्वरूप मुक्ति को प्राप्त हुए। ऐसी ही रचना कथा ग्यानचरी उनके गुरु वील्होजी ने भी लिखी थी सम्भवतः वही रचना इसका आधार बिन्दु है।

कथा हरि गुणः यह 192 विभिन्न छंदों की रचना है। हरिगुण सागर के समान विशाल और संजीवन मंत्र के समान जीवनदायक है ,जो सब सुखों की खान है। इसमें कल्कि अवतार और कवको बावनी की तरह ख से ह अक्षरों तक नाम जप की महिमा का वर्णन किया है। कालान्तर में विश्नोई कवि उदोजी अडींग सन् 1761-1876 तथा पीरदान लालस ने भी ऐसी रचनाएं लिखी है। यह रचना ईसरदास बारहठ के हरिरस की तरह है।

कथा औतार कीः यह 237 दोहे चौपइयों की रचना है जो राग आसा में गेय है। जाम्भोजी सम्बन्धित अनेक लोक कथनों को आधार मान कर यह कथा-काव्य लिखा गया है, जिसमें उनके अनेक चमत्कारों का वर्णन है। इसका आधार सम्भवतः उनके गुरु वील्होजी द्वारा लिखित कथा अवतारपात है।

कथा परिसिधः रास की ढाल पर लिखी गई यह 195 विविध छंदों की रचना है। इसमें जाम्भोजी के समग्र जीवन चरित्र सम्बन्धी प्रसिद्ध कथाओं का उल्लेख है। उनके द्वारा सन्1485 में विश्नोई पंथ की स्थापना, रणधीर को समुद्र पार ले जाना, बाबर का उनसे मिलना उनका सन् 1536 में बैकुण्ठवास जाना आदि अनेक विविध विषय इस रचना में शामिल है। एक साथ जाम्भोजी के जीवन पर सम्पूर्ण प्रकाश डालने वाली यह एक मात्र रचना है।

ग्यान महातमः यह 200 दोहे चौपइयों की रचना है। प्रत्येक चौपाई के पश्चात एक टेक पंक्ति भी जिसमें यह पता चलता है कि इसे गाया भी जाता था। ज्ञान द्वारा मोह को हराने की कथा इसमें है। ऐसी एक रचना पिसण सिंधार कवि सेवादास सन् 1663-1733 की भी हैं इसमें पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और लौकिक पुरुषों के नाम भी शामिल है।

ग्यान तिलकः यह 104 दोहों की रचना है, जिसमें दुश्प्रवृतियों की विजय और मुक्ति का रास्ता है। ग्यान महातम ग्यान तिलक और पिसण सिंधार तीनों के उदेश्य और वर्ण्य विषस में समानता है।

कथागज मोखः यह 69 छंदों की रचना है, जिसका आधार गज और ग्राह की पौराणिक कथा है। विष्णु भगवान ने अहंकार समाप्त करके गज का उद्धार किया। आपने गज और ग्राह के अहम् दोनों में हुए भयंकर युद्ध और हारते हुए गज की मनोदशा का बड़ा अच्छा वर्णन किया है। ऐसी ही एक रचना चारण कवि माधोदास दधवाड़िया की गज मोख है।

कथा उषा पुराणः परमानन्दजी के पोथे में संग्रहित इस रचना में 223 दोहे-चौपई छन्द है, जिसमें क्ष्ण के पौत्र अनिम्द्ध और बाणासुर की पुत्री उषा के विवाह का वर्णन है। यह प्रसिद्ध पौराणिकता कथा विभिन्न राग-रागनियों में गेग है। पुराण शब्द भी कथा की पौराणिकता को प्रकट करता है। डेल्हजी (सन् 1433-1493) की कथा अहदांवणी पदम (सन् 1443-1498) का किसनजी रो ब्याहलो और मेहोजी (सन् 1483-1544) की रामायण भी ऐसी ही रचनाएं है, जिनका उदेश्य भी बुराई पर अच्छाई की जीत है।

भोगल पुराणः यह 303 दोहे-चौपाइयों की रचना हैं, जिसके चार अध्याय है। इसमें ब्रहाण्ड काया उत्पति विनाश और दसावतार सम्बन्धी अनेक विषयों का वर्णन हुआ है। साथ ही निरजन, जाम्भोजी, सुर ब्रह्रजी आदि की वंदना भी है। विश्नोई समाज में बहुप्रचलित कलश पूजा मंत्र का भाव इसमें भी मिलता है। भूगोल-विज्ञान का यह अनुपम ग्रंथ है। लेखक के व्यक्तिगत संग्रह में भी भूगोल पुराण की ऐसी तीन प्रतियां है।

रामरासोः यह 176 छंदो की रचना है, जिसमें दवाळा, लीला दोहे और कवित है। लिपिकार परमानन्दजी बनियाल सन् 1693-1788 ने इसे रामचरित कहा है तथा स्वयं कवि ने इसे रामायण अथवा रामरास रा कवित कहा है जाम्भोजी ने अपने आपको विष्णु को बताया है और विष्णु का एक रूप राम भी है। यह रचना उसी राम रूपी विष्णु को समर्पित है। इसकी कथा राम बनवास से प्रारम्भ होती है। कलह का मूल कारण रावण क बहन शूर्पणखा थी। कथा की समाप्ति रावण वध लंका विजय और रामजी के अयोध्या वापस आने पर होती है। इसमें मन्दोदरी सीता, मन्दोदरी रावण हनुमान सीता, अंगद रावण आदि संवाद बड़े महत्वपूर्ण हैं। कवि सुरजनदासजी कृत रामरासो बहुत महत्वपूर्ण कृति हैं समूचे जांम्भाणी साहित्य में रासौ साहित्य पर ऐसी वीररस प्रधान रचना किसी अन्य विश्नोई कवि की कोई अन्य नहीं है।

महासभा संरक्षक कुलदीप विश्नोई ने विश्नोई सभा हिसार में किया तख्तापलट, अध्यक्ष प्रदीप बेनीवाल को हटाया

सड़क पर आ गई चौधराहट

हिसार| 20 जनवरी का दिन बिश्नोई मंदिर में फिल्मी अंदाज में बीता। सुबह बिश्नोई सभा की तरफ से कामकाज की समीक्षा के लिए बैठक बुलाई गई। इसकी अध्यक्षता सभा के प्रधान प्रदीप बेनीवाल कर रहे थे। वहां मौजूद सदस्यों ने बेनीवाल के कार्य पर संतोष जताया। इसी बीच सिंघम की तरह एंट्री होती है अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के राष्ट्रीय संरक्षक कुलदीप बिश्नोई की।

उन्होंने घोषणा की कि प्रदीप बेनीवाल को पदमुक्त किया जाता है और जगदीश कड़वासरा अब सभा के नए प्रधान होंगे। यह सुनते ही सभा में एकबारगी सन्नाटा पसर गया। लोग कुछ समझ पाते उससे पहले कुलदीप बिश्नोई वहां से निकल गए। उनके साथ जगदीश कड़वासरा व अन्य समर्थक भी चले गए। कुलदीप अपने आवास पर पहुंचे जहां नए प्रधान जगदीश कड़वासरा व उनकी टीम को बधाई दी। मंदिर परिसर से कुलदीप बिश्नोई के जाते ही वहां मौजूद बिश्नोई सभा के कुछ पदाधिकारियों, सदस्यों व बैनीवाल समर्थकों ने विधायक कुलदीप बिश्नोई के खिलाफ बवाल किया और कुलदीप बिश्नोई के खिलाफ नारे लगाए। समर्थकों ने कहा कि सभा में कुलदीप बिश्नोई द्वारा हस्तक्षेप करना और वर्तमान प्रधान को गैर कानूनी तरीके से हटाना निन्दनीय है। एडवोकेट मंदीप बिश्नोई ने कहा कि प्रदीप बेनीवाल का प्रधान के रूप में कार्य बहुत सराहनीय है। सोसायटी एक्ट के अनुसार किसी भी पदाधिकारी को हटाने की एक प्रक्रिया है। ऐसे कोई किसी को नहीं हटा सकता। पूर्व जिला रजिस्ट्रार रोहताश कुमार ने इसके कानूनी पहलू पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार की कार्यवाही का औचित्य नहीं है। प्यारेलाल कड़वासरा ने कहा कि सोसाइटी एक्ट में संरक्षक का पद नहीं है, जोकि कुलदीप को अवैध रूप से बनाया गया है। दूसरे दिन बेनीवाल के ऑफिस पर नेम प्लेट भी बदल गई। अब यह मामला सोसायटी रजिस्ट्रार के पास चल गया है। वहां पांच मार्च को सुनवाई होनी है।

मैं ही प्रधान...दोनों ही गुटों के अपने-अपने दावे, फटाफट संभाला पद

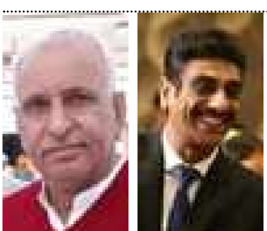

जगदीश कड़वासरा, प्रदीप बेनीवाल

बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान प्रदीप बेनीवाल ने कहा कि कुलदीप बिश्नोई की यह कार्यवाही निंदनीय है। वह पिछले साल जून में संवैधानिक तौर पर सर्वसम्मति से तीन साल के लिए प्रधान चुने गए थे। इसलिए किसी बैठक में अचानक कुलदीप बिश्नोई की घोषणा कोई मायने नहीं रखती। वह प्रधान बने रहेंगे। वहीं, हिसार निवासी जगदीश कड़वासरा को हिसार बिश्नोई सभा का प्रधान नियुक्त करने की घोषणा अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के राष्ट्रीय संरक्षक कुलदीप बिश्नोई बिश्नोई ने की। बिश्नोई मंदिर में रविवार सुबह बिश्नोई सभा कार्यकारिणी की बैठक की अध्यक्षता अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष सहदेव कालीराणा ने की। बैठक में उपस्थित बिश्नोई सभा के लोगों ने प्रधान प्रदीप बेनीवाल को पदमुक्त करने की घोषणा की। जगदीश ने कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि वे समाज की उन्नति के लिए पूरी मेहनत और ईमानदारी से कार्य करेंगे। वहीं जारी एक विज्ञप्ति में बिश्नोई सभा के सचिव कुलदीप देहडू और सह सचिव विकास फुरसानी ने कहा कि जगदीश कड़वासरा ने अपना कार्यभार संभाल लिया है। सभा के सदस्य मनदीप बिश्नोई ने इस घटना की निंदा की। उन्होंने कहा कि अध्यक्ष को उनके पद से हटाने की प्रक्रिया अवैध है। इसलिए, बेनीवाल इस पद पर बने हुए हैं। उन्होंने कहा कि कुलदीप बिश्नोई की घोषणा का कोई कानूनी आधार नहीं है और उन्होंने अपने निहित राजनीतिक हितों के कारण बिश्नोई सभा को कमजोर करने की कोशिश की है। कुलदीप बिश्नोई के एक सहयोगी ने बताया कि सभा के कुल 685 सदस्यों में से 500 से अधिक सदस्यों द्वारा प्रतिनिधित्व को देखते हुए निर्णय लिया गया है। ये सदस्य अध्यक्ष में बदलाव चाहते थे। उन्होंने कहा कि यह निर्णय सभा के संविधान के अनुसार उचित प्रक्रिया द्वारा लिया गया है। सूत्रों ने बताया कि प्रदीप बेनीवाल 2016 में अध्यक्ष चुने गए थे जब वह कुलदीप बिश्नोई के विश्वासपात्र थे। उनका तीन साल का कार्यकाल पूरा होने के बाद जून 2019 में उन्हें फिर से चुना गया। हालांकि, विधानसभा चुनाव के दौरान बेनीवाल के भाजपा में शामिल होने के बाद दोनों में दूरियां बढ़ती गई।

ग्रेट लीडर्स: स्व. रामसिंह

कमिश्नर साब तो यूं बोल रैया जाणै जोधपुर इंया रौ इज बसायोड़ो

अखिल भारतीय विश्नोई महासभा के पूर्व अध्यक्ष व राजस्थान में कांग्रेस के कद्दावर नेता रामसिंहजी विश्नोई की कार्यशैली को आज भी लोग याद करते हैं।

वाकया 28 नवंबर 2000 का है। जोधपुर में बरकतुल्लाह खान स्टेडियम में विकास कार्यों का लोकार्पण समारोह था। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत मुख्य अतिथि थे। यहां राजस्थान आवासन मंडल ने ही विकास कार्य करवाए थे। मंडल के कमिश्नर आईएएस आर्य समारोह में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व अन्य मंत्रियों के सामने विभाग की उपलब्धियां बता रहे थे। इसके बाद जलदाय मंत्री रामसिंहजी का भाषण हुआ। उन्होंने हाउसिंग बोर्ड के कमिश्नर द्वारा बताई गई उपलब्धियों पर चुटकी लेते हुए कहा कि कमिश्नर साब तो इता काम गिणा रैया है कि जाणे जोधपुर इंया रौ इज बसायोड़ो है। इस पर समारोह में सबकी हंसी फूट पड़ी। रामसिंहजी यहीं नहीं रुके। स्टेडियम में लाखों रुपए खर्च करवाए विकास कार्यों पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की ओर इशारा करते हुए कहा कि ए अशोकजी हाउसिंग बोर्ड के चेयरमैन मानसिंहजी देवड़ा की फाइलां तो फटाफट चला देवे। म्हे कोई फाइल भेजां तो पाछी लौटा देवे या ध्यान ई नीं दे। अब आप ही बताओ, स्टेडियम ज्यादा जरूरी है या पाणी। देखो, अठै क्रिकेट चलाओ, ठीक है, पण ओ म्हारी समझ ऊं बाहर है। थ्हे भलांइ मैळो करो। म्हे तो गांवां में कबड्डी, फुटबॉल और हॉकी खेलदा। म्हानै तो इण खेलां रौ इ कोड हो। पूरे समारोह के दौरान उनका यह भाषण चर्चा में बना रहा। लोगों को यह समझ नहीं आया कि वे मुख्यमंत्री की तारीफ कर रहे थे कि कटाक्ष।

29 नियम

तीस दिन सूतक पांच ऋतुवंती न्यारो।

सेरा करो स्नान, शील संतोष शुचि प्यारो।

द्विकाल संध्या करो, सांझ आरती गुण गावो।

होम हित चित सूं होय, बास बैकुण्ठा पावो।

पाणी बाणी ईंधणी दूध इतना लीजे छाण।

क्षमा दया हिरदे धरो गुरु बतायो जाण।

चोरी निंदा झूठ बरजियो वाद न करणो कोय।

अमावस्या व्रत राखणो भजन विष्णु बतायो जोय।

जीव दया पालणी रूंख लीलो नहीं घावे।

अजर जरे जीवत मरे वे वास स्वर्ग ही पावे।

करे रसोई हाथ सूं, आन सूं पल्ला न लावे।

अमर रखावे ठाट बैल बधिया न करावे।

अमल तमाखू भांग मद्य मांस सूं दूर ही भागे।

लील न लावे अंग देखत दूर ही त्यागे।

जीव हत्या जारी
चिंता: रक्षक ही बने भक्षक

नागौर में रेस्क्यू सेंटर व तालछापर में वन्य जीव चौकी में वन विभाग के ही कर्मचारी मांस पकाते मिले

बीकानेर के लूणकरणसर में 40 हिरणों के शिकार की घटना, कुएं से निकाले वन्यजीवों के कंकाल

बीकानेर| लूणकरणसर में 22 जनवरी की रात को सादोलाई गांव के आस-पास बड़ी संख्या में हिरणों के शिकार का मामला सामने आया। सूचना देने के बाद भी वन विभाग के रेंजर व वनपाल ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। इसके खिलाफ विश्नोई समाज ने 23 जनवरी को लूणकरणसर में रेंजर कार्यालय के बाहर धरना दिया। यह दस दिन तक धरना लगा। इस दौरान वन विभाग के आला अधिकारियों के साथ ही कई जनप्रतिनिधि भी पहुंचे। मगर, जीव प्रेमी दोषी वन रक्षक व वनपालों को सस्पेंड करने की मांग पर धरने पर बैठे रहे। दस दिनों तक उनकी सुनवाई नहीं हुई तो उनका धैर्य जवाब दे गया। उन्होंने धरना स्थल से 70 किमी दूर स्थित बीकानेर कलेक्ट्रेट तक पैदल कूच का ऐलान कर दिया। हजारों की संख्या में जीव प्रेमी बीकानेर के लिए पैदल पहुंचे। पुलिस ने उन्हें हाइवे पर रोका भी। करीब 45 मिनट तक वहां माहौल गर्माया रहा। जीव प्रेमियों ने कहा कि वे अपनी बात रखने बीकानेर जा रहे हैं। जीव प्रेमी है, हाइवे जाम करना या तोड़फोड़ करना, उनका चरित्र नहीं है। उसके बाद पुलिस ने उन्हें आगे जाना दिया। जीव रक्षा संस्थान के जिलाध्यक्ष मोखराम धारणिया ने बताया कि लूणकरणसर रेंजर व छत्तरगढ़ के तीन वनपालों की शिकारियों से मिलीभगत है। हमारे संस्थान के पदाधिकारी के सामने वे शिकारियों के घर पहुंचे। वहां पर उनके यहां दो घंटे रुके। चाय पी, मगर उन्हें गिरफ्तार नहीं किया। शिकार की घटना को वे मानने को तैयार नहीं थे जबकि मौके पर बड़ी संख्या में हिरण शिकार के सबूत थे। वहां पर उनके कटे हुए सिंग, खून के निशान थे। सादोलाई गांव के कुएं से हिरणों के अवशेष मिले। इतना सब होने के बावजूद अधिकारी उनके खिलाफ केवल जांच कर रहे हैं।

नागौर: रेस्क्यू सेंटर में आए घायल हिरण को जमीन निगल गई या आसमां

नागौर| पिछले साल 28 अक्टूबर को नागौर जिले के गोगेलाव कन्जर्वेशन रिजर्व के रेस्क्यू सेंटर में चावण्डिया गांव से रेस्क्यू कर लाया घायल वन्यजीव हिरण कहां है। इसका जबाब घटना के चार महीने बाद भी प्रशासन के पास नहीं है। चावण्डिया गांव में शिकारियों की गोली से घायल हिरण को श्री जम्भेश्वर पर्यावरण एवं जीव रक्षा प्रदेश संस्था के जिला संगठन मंत्री पार्थवर्धन सियाग व अरविंद ने वन विभाग की रेस्क्यू टीम को बुला इलाज के लिए रेस्क्यू करवाया। शाम को पार्थवर्धन व तहसील अध्यक्ष कालूराम सियाग चावण्डिया गांव से रेस्क्यू कराए घायल हिरण को देखने के लिए रिजर्व कंजर्वेशन गोगेलाव के रेस्क्यू सेंटर पंहुचे तो वहां मौजूद वन विभाग कर्मचारी मुन्शी खां, भंवराराम व दो अन्य व्यक्ति शबीर खां एवं जमील खां रेस्क्यू सेंटर के अन्दर शराब पार्टी कर मांस पक्का रहे थे।

जीव रक्षा बिश्नोई सभा ने बनाई नई कार्यकारिणी

जोधपुर| अखिल भारतीय जीव रक्षा विश्नोई सभा के प्रदेश अध्यक्ष बलदेवराम सोऊ ने प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा की। हरिराम धायल कोलायत, गंगाराम पूनिया सांचौर, अमरचंद दिलोइया भीलवाड़ा, अनन्तराम खिलेरी

भंवार बाड़मेर, हरिराम बुड़िया कांकाणी, फरसाराम सोऊ रामड़ावास, रघुनाथराम खिलेरी बाड़मेर को उपाध्यक्ष, बाबूलाल मांजू को कोषाध्यक्ष, श्रवण बुड़िया गुड़ाविश्नोइयान को सचिव, ओमप्रकाश उदाणी फलोदी को महासचिव, हेमाराम पंवार रोहट प्रचार मंत्री, कैलाश बेनीवाल जालौर एंव सुरेश कुमार लोल बिलाड़ा को मीडिया प्रभारी, राकेश माचरा ओसियां, परसाराम ढाका रानीवाड़ा, मांगीलाल ईशरवाल लोहावट प्रवक्ता व महावीर धारणिया श्री गंगानगर विधि सलाहकार बने। रामाकिशन भादू रावतसर, रामकिशन साहू फुलण, जेताराम डुडी भेड़, मांगीलाल पुर, पूनाराम ढाका लोहावट, विजयपाल डेलू बीकानेर, राधेश्याम पेमाणी जैसलमेर, विजयपाल जांगु श्री गंगानगर, भंवरलाल खिलेरी बाप, ओमप्रकाश जाणी नेहड़ा, उदयपाल लोहमरोड़ को कार्यकारिणी सदस्य व लूम्बाराम हिंगोली भोपालगढ़ को कार्यालय मंत्री बनाया।

रावर में वन्यजीव संगठन का गठन

वन्यजीव एवं पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

बिलाड़ा| बिलाड़ा उपखंड के रावर गांव में हुए चर्चित कृष्ण मृग हिरण शिकार प्रकरण के बाद जागरुकता एवं सजगता से बढ़ते हिरण शिकार की घटनाएं रोकने के लिए लामबंद युवों की एक बैठक घटना के ठीक एक माह बाद हुई। इसमें वन्यजीव एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए वन्यजीव संगठन रावर का गठन कर कार्यकारिणी बनाई गई। पर्यावरण प्रेमियों ने सर्व सहमति से सुरेश गोदारा को अध्यक्ष मनोनीत कर कार्यकारिणी का पहला विस्तार किया गया। नव निर्वाचित अध्यक्ष की अध्यक्षता में शुरु हुई सदस्यों की बैठक में प्रस्ताव पारित कर सर्व सहमति से परसाराम भादू उपाध्यक्ष, हनुमानराम गोदारा संगठन मंत्री, राजू खिलेरी कोषाध्यक्ष, राकेश लोल, शंकरलाल गोदारा, फरसाराम कांवा, सहदेव ढ़ाका महासचिव, बीआर विश्नोई को प्रवक्ता मनोनीत किया। इस मौके पर नव निर्वाचित पदाधिकारियों को संगठन सदस्यों ने माला पहनाकर बधाई दी। सभी ने आभार व्यक्त कर वन्यजीव एवं पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। इस मौके पर श्याम जालेली, मोहन चौधरी, सहित कई पर्यावरण प्रेमी उपस्थित रहे।

इधर, शैतानसिंह की शहादत के आरोपी संदेह का लाभ ले हुए बरी

फलोदी| जनवरी 2014 में हिरण शिकारियों की गोली से शहीद हुए ननेऊ सालासर निवासी शैतानसिंह विश्नोई को मरणोपरांत 'उत्तम जीवन रक्षा पदक' से सम्मानित किया गया था। हाल ही में इस मामले की सुनवाई फलोदी कोर्ट में थी। कोर्ट ने आरोपियों को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया। हालांकि इस मामले में वन विभाग ऊपरी अदालत में चुनौती देगा। बरी होने के बाद समाज ने भी महासभा अध्यक्ष की अध्यक्षता में बैठक कर आदेश को चुनौती देने का निर्णय लिया। उल्लेखनीय है शैतानसिंह कड़ाके की सर्दी में बंदूक की आवाज सुन रात को नींद से जागे और पास के धोरों में हिरण मार रहे शिकारियों से जा भिड़े। उन्होंने शिकारियों को पकड़ने का प्रयास किया। इसी दौरान शिकारियों ने बचने के लिए उन्हें गोली मार दी। ऐसे वीर विश्नोई योद्धा को शत-शत नमन। राज्य में पिछली सरकार में अजमेर में आयोजित समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने शहीद शैतानसिंह की पत्नी पुष्पा विश्नोई को उत्तम जीवन रक्षा पदक से सम्मानित किया था।

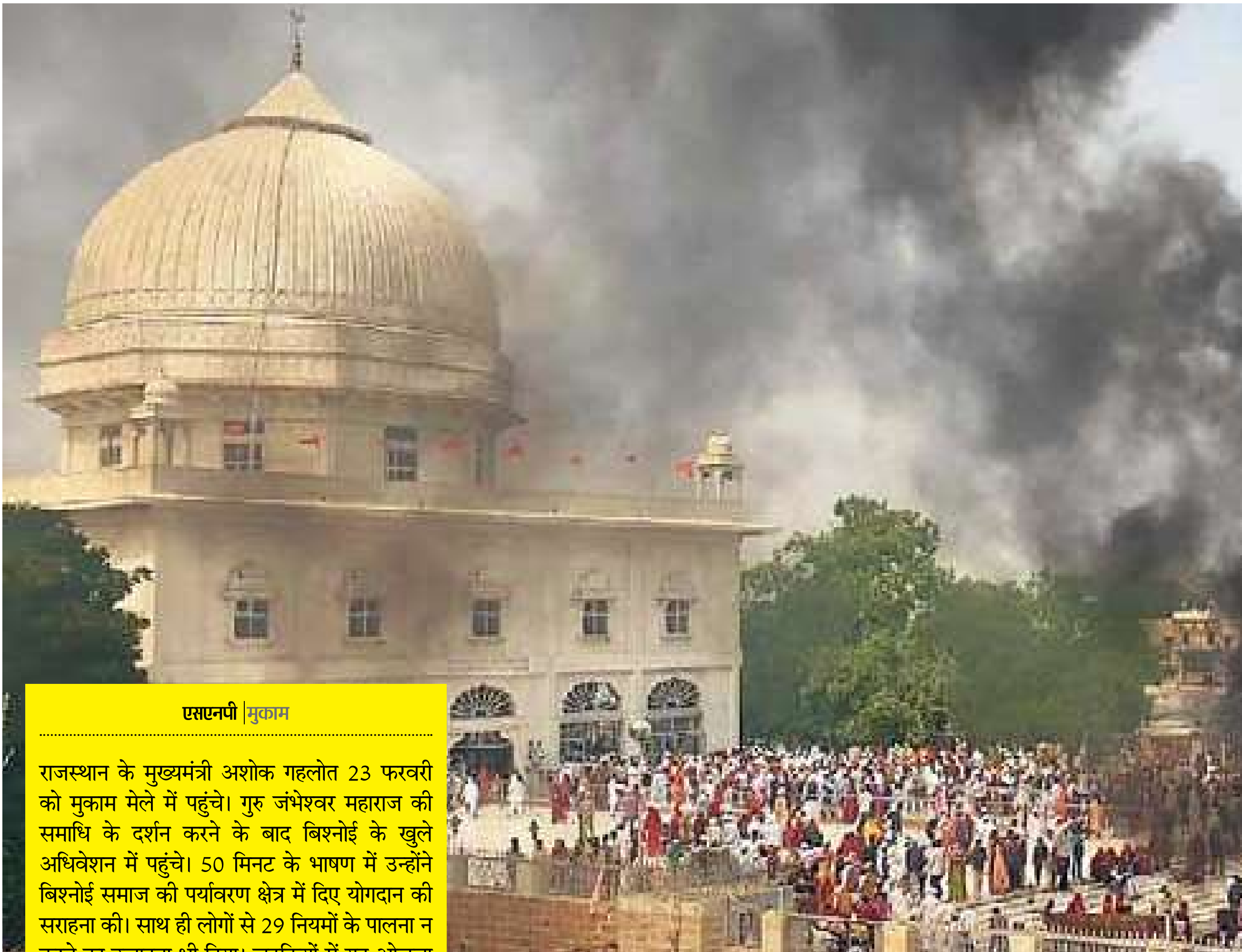

एसएनपी |मुकाम

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत 23 फरवरी को मुकाम मेले में पहुंचे। गुरु जंभेश्वर महाराज की समाधि के दर्शन करने के बाद बिश्नोई के खुले अधिवेशन में पहुंचे। 50 मिनट के भाषण में उन्होंने बिश्नोई समाज की पर्यावरण क्षेत्र में दिए योगदान की सराहना की। साथ ही लोगों से 29 नियमों के पालना न करने का उलाहना भी दिया। चुटकियों में यह ओळबा भी दे दिया कि आपने काफी समय बाद बुलाया। आशय यह था कि जब वे मुख्यमंत्री नहीं थे तब समाज ने उन्हें नहीं बुलाया। समाज ने मंच से उनके सामने कई मांगें रखी। जवाब में गहलोत ने कहा कि जो कहता हूं वह करता भी हूं। मुख्यमंत्री के दौरे के दौरान दुर्भाग्य रहा कि उनके सामने कुछ लोगों ने मोदी-मोदी के नारे लगाए। यह दूसरा मौका है जब किसी विश्नोई समाज के कार्यक्रम में गहलोत की मौजूदगी में मोदी-मोदी के नारे लगाए गए। इससे पहले जांबा मेले में भी बतौर मुख्य अतिथि बुलाकर उनके सामने इस तरह की हरकत की गई थी। गहलोत ने बिश्नोई महासभा के संरक्षक कुलदीप बिश्नोई पर चुटकी लेते हुए कहा कि हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल ने राजस्थान से रिश्ता निभाया। आप मोरिया मुंजासर गांव के हो। भजनलाल की तरह आप भी राजस्थान से रिश्ता निभाओ। गहलोत ने बिश्नोई रत्न स्व. भजनलाल, स्व. रामसिंह विश्नोई (साब) पूनमचंद एवं रघुनाथ विश्नोई को याद किया। उन्होंने कहा कि जब रघुनाथ विश्नोई मंत्री थे तब भी मैं मेले में श्रदासुमन अर्पित करने आया था।

समाज ने ये डिमांड रखी

- **नोखा विधायक बिहारीलाल**| बगरावाला धोरा के लिए 5 KM सड़क का डामरीकरण और अलाय से मुकाम एवं खींवसर से बिलाड़ा मेगा हाइवे स्व. रामसिंह के नाम करने।
- **लोहावट विधायक किश्नाराम** | जयपुर में 5 बीघा जमीन पर्यावरण संस्थान को आवंटित करवाने की मांग रखी।
- **फलोदी विधायक पब्बाराम** | जांबा से नोखा सड़क डबल लेन बनाने व पर्यावरण संरक्षण कानून को मजबूत बनाने की मांग की।
- **सांचौर विधायक व मंत्री सुखराम** | खेजड़ली में शहीद स्मारक की मांग।
- **आदमपुर विधायक कुलदीप** |जयपुर में 2 एकड़ जमीन, जयपुर - उदयपुर सड़क मार्ग मां अमृता देवी व बीकानेर वेटरनरी कॉलेज नामकरण अपने पिता चौ. भजनलाल के नाम करने की मांग की।

गहलोत ने यह दिया जवाब

गहलोत बोले, समाज की यह मांग वाजिब है। हर हाल में पूरी होगी। इससे पहले भी जो मांगा था, दिया। पहली बार आया तब मुकाम तक सड़क के लिए कहा था, वह बनवा दी। हाल ही खेजड़ली में स्मारक बनवाने का निर्णय लिया। पवित्र जांभा सरोवर में पानी नहीं होने से समाज के लोग दुखी थे। अब इस सरोवर में नहर से पानी पहुंचाने का इंतजाम कर दिया है। कभी लोगों को परेशान नहीं होना पड़ेगा।

रवि व अन्य प्रतिभाएं पुरस्कृत

इंटरनेशनल क्रिकेटर रवि विश्नोई, दिव्यांग धाविका संगीता विश्नोई, तीरदांज कांस्टेबल श्रीचंद, मैराथन दौड़ के श्रवण बेनीाल, एथलेटिक्स पूजा विश्नोई सहित कुल 25 प्रतिभाओं को पुरस्कृत किया गया। खुले अधिवेशन में मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य रामानंद सहित कई लोगों ने संबोधित किया।

...और मुकाम में भी मोदी-मोदी

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत दूसरी बार मुकाम मेले में पहुंचे, कुलदीप विश्नोई को दी राजस्थान के विश्नोइयों से रिश्ता निभाने की नसीहत।

मुकाम में गुरु जंभेश्वर धाम पर फाल्गुन मेले में राजस्थान सहित पंजाब हरियाणा, मध्यप्रदेश व अन्य प्रदेशों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे और धोक लगाई और खोपरा व घी से आहूतियां दी। विष्णु-विष्णु भर रे प्राणी जयघोष के साथ बड़ी संख्या में लोग अपने परिवार सहित मुकाम पहुंचे।

मुख्यमंत्री ने मंत्रियों के साथ मंदिर में धोक लगाई।

सुनो सुनो... भाइयों कुर्सियां खाली रखो

मुख्यमंत्री के आगमन से पहले मंच पर अतिथियों की कुर्सियां पर अन्य लोग बैठ गए। मंच संचालन करने वालों को बार-बार आग्रह करना पड़ा। फिर भी लोग कुर्सियों पर ही जमे रे।

मित्रता...दोस्त से रखवाई प्रतिमा लगाने की बात

महासभा के संरक्षक कुलदीप विश्नोई के राजनीतिक दोस्त माने जाने वाले रणधीर परिहार को तीसरी बार मंच सांझा का अवसर मिला। उन्होंने खुले अधिवेशन में कहा कि स्व. भजनलाल की मूर्ति मेला प्रांगण में स्थापित होनी चाहिए।

मैराथन...श्रवण व अनीता ने जीती रेस

22 फरवरी को मैराथन दौड़ में 1 हजार लोगों के साथ मंत्री सुखराम विश्नोई, संरक्षक कुलदीप विश्नोई भी दौड़े। श्रवण बेनीवाल ने 1 घंटा 9 मिनट में 21 KM व महिला वर्ग में अनिता ने 1 घंटा 23 मिनट में यह दौड़ पूरी की। 6KM की दौड़ में सभी लोग दौड़े।

महासभा की ओर से किया गया मुख्यमंत्री का अभिनंदन, खेजड़ली स्मारक का जताया आभार

अखिल भारतीय विश्नोई महासभा की ओर से मुख्यमंत्री का यहां अभिनंदन किया गया। अध्यक्ष हीरालाल भंवाल ने सूत की माला पहनाई। वन एवं पर्यावरण मंत्री सुखराम ने साफा व नोखा विधायक बिहारीलाल ने शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन किया। संरक्षक कुलदीप विश्नोई ने स्मृति के रूप में हिरण की प्रतिमा भेंट की। स्वागत भाषण लूणी विधायक महेन्द्र खोखर ने रखा। सरकार की ओर से खेजड़ली बलिदान दिवस को राज्यकीय अवकाश घोषित करने पर मुख्यमंत्री का आभार जताया। नोखा विधायक बिहारीलाल ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को 2010 की याद दिलाते हुए कहा कि तब मुकाम मेले में बतौर मुख्यमंत्री के रूप में आपके आगमन पर 600 यूनिट रक्त से आपको तोला गया था। शिवराम जाखड़ ने झालाना (जयपुर) में पर्यावरण संरक्षण के लिए आवंटित भूमि पर मेहराणा धोरा (पंजाब) की तर्ज पर मां अमृता देवी का स्मारक बनाने की मांग की। गुड़ामालानी के पूर्व विधायक लादूराम डऊकिया पर्यावरण असंतुलन पर चिंता जताई। बीरबलराम हुबली (कर्नाटक) ने सोशल मीडिया के दुष्प्रचार को लेकर चिंता जाहिर की। उन्होंने कहा कि विश्व के 25 देशों में विश्नोई समाज के लोग प्रवास करते हैं। सेवक दल के अध्यक्ष सहदेव कालीराणा मेले के दौरान भी कई लोग नशे की प्रवृत्ति को बढ़ा रहे हैं। इस पर कड़ी कार्रवाई की जाए।

चैम्पियन बना एथलीट राहुल बिश्नोई

चंडीगढ़| पंजाब के सगरुर में सम्पन हुई 14 वर्षीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में राजस्थान की ओर से खेल रहे राहुल बिश्नोई पुत्र बजरंग खिलेरी ने राष्ट्रीय स्तर की 200 मीटर के फाइनल इवेंट में स्वर्ण पदक जीत कर समाज को गौरवान्वित किया। राजस्थान का प्रतिनिधित्व कर रहे राहुल ने 65 साल के पुराने रिकार्ड को ध्वस्त करते हुऐ 200 मीटर का स्वर्ण पदक का खिताब अपने नाम किया है। जय श्री करणी पब्लिक उच्च माध्यमिक स्कूल अनूपगढ (श्री गंगानगर) का छात्र राहुल ने प्रतियोगिता का पिछला रिकॉर्ड जो कि 23.40 सेकंड का था। उसको तोड़ते हुए 23.38 सेकंड में यह खिताब जीतकर एक नया राष्ट्रीय कीर्तिमान भी स्थापित किया। एथलीट राहुल पहले जिला स्तर पर 100, 200, 400, मीटर के इवेंट में स्वर्ण पदक हासिल कर जिले का बेस्ट एथलीट एवं बाद में राज्य स्तर पर 100, 200, 400 मीटर के इवेंट में स्वर्ण पदक हासिल कर कर राज्य का बेहतरीन एथलीट बन गया है।

विश्नोई सभा जोधपुर के अध्यक्ष भादू नहीं रहे

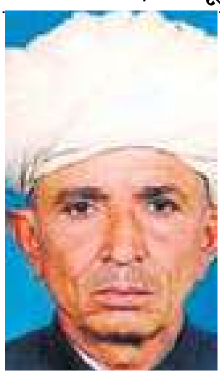

जोधपुर विश्नोई सभा के अध्यक्ष व समाज के वरिष्ठ पंच गोरधनराम भादू देसूरिया का निधन हो गया। इससे समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। उन्होंने समाज के विकास के लिए बरसों तक काम किया। उनके पुत्र पप्पूराम करवड़ गांव के सरपंच हैं। विभिन्न जनप्रतिनिधियों ने भादू के निधन पर देसूरिया जाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

आगामी आयोजन व मेले

चैत्र अमावस्या मेला| 24 मार्च मंगलवार जांबोलाव, लोदीपुर, सोनड़ी, मालवाड़ा, सरनाऊ, गुड़ामालाणी

वील्होजी मेला रामड़ावास | 4 अप्रैल

वैशाख अमावस्या| ओसियां, भाड़वी 22 अप्रैल बुधवार

शहीद गंगाराम जाणी मेला नेहड़ा | 26 अप्रैल रविवार

इस अंगने में हमारा क्या काम...

यह तस्वीर फलोदी क्षेत्र के एक गांव की है। जहां किसी समाज के देवता की समाधि पर मेला लगता है। इसमें काफी संख्या में उस क्षेत्र के विश्नोई समाज के लोग भी धोक देने पहुंचते हैं। मेले के दिन यहां लगी श्रद्धालुओं की लाइन में कई विश्नोई महिलाएं व बच्चे दिखाई दिए। जांभोजी ने इन सबको वर्जित किया था।

आप अपने क्षेत्र की गतिविधियों व समाचारों को इस पते पर भेजें......समराथल न्यूज पोस्ट

हमारा पताः 30, पाल बालाजी मंदिर के सामने जोधपुर राजस्थान-342001

वॉट्सएप नंबरः 9166630130 | ईमेलः samrathal.newspost@gmail.com

सकपण री कला

आ बात सुण थांने अचांबो वेलां के शास्त्रा में सूणयोड़ी सोले कलावां रे पछेई एक कला ओरू व्है। उणरो नाम है सकपण करावण री कला ।

कोई ऐड़ा लोग समाज में है ,आं कने हर बात री जानकारी रेवे ।किणरे किया छोरा छोरीयां है ,किता परणिजियोड़ा है अर किया कुंवारा।

आने छोरे री सगाई करणी व्हे तो छोरी आळे ने इण भांत राजी करे,छोरो लाखां में एक है ,बीए पास है ,बाप रे एक ही लाडेसर है ,घणो कूटलखानो कांई काम रो व्हे ,छोरी सोरी रेसी ।ईयां समझो नी राज करसी। जे छोरे रो परिवार मोठो हुए तो पछे बात रो ढंग दूजो व्हे,असल खावतो पीवतो परिवार है ,छव भाई है आगले रे ,बाबा काका न्यारा ,समाज में बीस बातां हुवे कदैई काम पड़े तो छःलाठियां साथे उठे।

छोरो नौकरी करतो हुवे तो व्यापार री निन्दा करे ,व्यापार में कांई पड़ियो है चड़ती सगलां ने दिसे पण जद उतार आवे तो घड़े में मूंडो घाल रोवणो पड़े । राज री नौकरी राजा नौकरी ,एक तारीक आवतांई दो दो हजार रा कड़कड़ाट करता नोट मिले ।जे छोरो व्यापार करे तो ऐ श्री नौकरी ने मोळी बतावण में टेम नी लगावे ,रांड री नौकरी में कांई पड़ियो है गुलामी है गुलामी ,बन्धीबधाई फुलकड़ी मिले ठीक है छोरो आलू कांदा बेचे ,पण आपरो धंधों आपरो हुवे ।मरजी रो राजा ,किणी अफसर री गुलामी कोनी ।

छोरे री सगाई में नौकरी घर बार जमीन जायदाद री बातां हुए। रूप रंग री बातां कोनी हुए। गोरो तो खेर गोरो हुवे पण कि लोई गोरो गिणीजे । छोरी री सगाई री बात चाले जणां रंग रूप री बात चाले ।अर उणरा बखाण करे ।पण दुनिया में सेंग छोरियां तो फूटरी हुवे कोनी ,पण वे कुणसी कुवांरी रैवे बाने तो अ कलाकार ईसां घरां मे भेजे है ,के फूटरी उबी देखती रह जाय ,अर कोजकी फैरा खाय। अर थोड़ा बरसां बाद गोदी में टाबर रमावती मिले । छोरी अणपढ व्हे तो उणरी बात ईयां टोले ,छोरी रंग रूप में इक्कीस है ,हाडे गौडे लूठी है घर रो सगळो काम संभाले है । बीनणी आया पछे थाने तो कोरी जीभ हिलावणी है ,हाथ हिलावण री जरूरत ही नी पड़े। जे कोई नुवी हवा रो सिकार हुयोड़ो लिखी पढ़ी बीनणी सारू लाळा नाकतो हुवे ,तो बीरे आगे थाली यूं पुरसे। छोरी बीए.पास है ,बीएड कर रही है ठीक है आपाने बीं री कमाई नी खावणी है जे पांचा दिना काम पड़ जावे तो आगली नौकरी कर सके। सकपण करावणियां आ देखे के ओ घर दायजे रो लोबी है तो बिने चमकता धोरा दिखावे। मैं केऊ के इण घर री होड नी हुवे छोरी रो बाप लखपति है एक ही छोरी है। हां एक बात है छोरी थोड़ी खुड़ावे है, पण आपाने के इत दौड़ में भेजणी है। लुगाई लिछमी हूवे, लिछमी तो घर में ई शोभा देवे। जे छोरी काणी हुवे तो कैवण रो ढंग दूजो हुवे। लोग थाने पछे केवेलां। पण मैं थाने पहलां ही कह दूं ,छोरी री एक आंख में थोड़ी कसर है पण दुनियां में कठे कांण कसर कोनी हुए। आ के कसर में कसर है। दो आंखियां से दिखे उतोई एक आंख से दिखे। दो आंखियां से दो थोड़ाई दीसे।

जोग री बात जे किणीरी दोनूं आंखियां इ नी है तोई सकपण करावणियां हिम्मत नी हारे आंखियां आज है अर काले फूट जावे तो कांई करां सो माएं बुढापा में नबे जणां आदि हुवे। म्हे तो ककेऊ आंख तो हिये में हूणी चाहीजे। आंखियां हुवे जणा छपन मूडी बातां देखती पड़े। सकपण करणियां बात ने सौ तरह ऊं परोटे,गोरी छोरी ने उदर री अफसरा अर पदमणी बतावे। कोई फिलम रो सोकीन व्हे तो उणने हेमामालण बतावे ,पण छोरी काली हुवे तो ओ मंत्र सुणावे ,भाई कालां रा गांव किसा नारा बसे ,दुनियां में दोई रंग वे कालो के गोरो।

जे कोई छोरी हद भांत भूंडी व्हे तो उणरे आगे ज्ञान इण भांत पुरसे, रूप तो आगली ने भगवान दियो जिसो है, पण गुणा री खांण है घर सोरो संभालसी, थाने घरू बात केऊं घणी रूपाली घणारी शत्रु हुवे। लोग चोइसू घड़ी आंखियां फाड़े।

पांचवां सबद

रामस्वरूप जंवर जैसला
शोधार्थी
जेएनवीयू, जोधपुर

ओ३म् अइया लो अपंर पर बाणी। म्हे जपां न जाया जीऊं। नव अवतार नमो नारायण, तेपण रूप हमारा थीयूं। जपी तपी तक पीर ऋषेश्ग्र कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं। खेचर भूचर षेत्रपाला परगट गुप्ता। कायं जपीजै तेपण जाया जीऊं। बासग शेष गुणिंदा फुणिंदा। कायं जपीजै तेपण जाया जीऊं। चौसट जोगनि बावन बीरूं। कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं। जपां तो एक निरालंभ शंभू। जिहिं के माई न पीऊं। न तन रक्तूं न तन धातूं। न तन ताव न सीऊं। सर्व सिरजत मरत बिवरजत। तासन मूलज लेणा कीयों।। अइयालों अपरंपर बाणी। म्हे जपां न जाया जीऊं।।

व्याख्या

इस सबद के माध्यम से गुरु जाम्भोजी ने जप के विषय में बताया है कि मानव को युक्तिपर्वक जीवन यापन करने व मरने के बाद मोक्ष प्राप्ति हेतु किसका जप(ध्यान-स्मरण आदि) करना चाहिए। कान्हा उद्धरण की शंका का समाधान गुरु जाम्भोजी ने इस प्रकार किया-

हे जीव! मैं अपनी वाणी से साधारण सांसारिक मनुष्यों की भांति जप(स्मरण) नहीं करता हूं। मैं स्वयं की परम्परा का स्मरण करता हूं। नमो नारायण भगवान विष्णु के प्रमुख नौ अवतार है जो हमारा (विष्णु) का ही स्वरूप है। मैं उनका (स्वयं विष्णु का) जप करता हूं।

सांसारिक जन्मजात जीव, तपस्वी पीर-पैगम्बर, ऋषि-मुनि आदि लौकिक जीवों का मनुष्य को स्मरण नहीं करना चाहिए। इनके अति-रिक्त किसी भी प्रकार के राक्षसों(दैव्यों) का जप(स्मरण) भी ठीक नहीं है। साथ ही विविध योनियों में व्याप्त जोगनियां, भैरू इत्यादि का जप भी उचित नहीं हैं क्योंकि ये सभी जन्मजात जीव योनि हैं, जो मरने के पश्चात् भूत-प्रेत आदि योनि में चले गये होते हैं, उनकी आत्मा इधर-उधर भटकती रहती है साथ ही उचित संस्कार न होने वाले जीवित लोगों से वे पूजा करवाते हैं। मानव को सदैव जन्मजात जीव जैसे-जप करने वाले ढोंगी, तपस्वी, विविध दैव्य, जोगनिया भैरु इत्यादि का स्मरण कभी भी नहीं करना चाहिए।

मैं माला के माध्यम से यह सन्देश सुनाने के लिए लोक में अवतरित हुआ हूं कि मनुष्यों को सदैव निराकार और निरालम्भ विष्णु का जप करना चाहिए, जिनके न तो माता-पिता है तथा न ही उनका पंच भौतिक शरीर है। जिनको सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास आदि कभी भी नहीं लगती है। वे सम्पूर्ण सृष्टि का सृजनहार(पालन कर्ता) तथा सभी का मूल है। उन्हीं का जप करना चाहिए।

गुरु जाम्भोजी के इस सबद प्रसंग का मूल संदेश यही है कि- सृष्टि के सृजनकर्ता-निराकार, सिरालम्भ विष्णु का जप करके ही व्यक्ति युक्तिपूर्वक जीवन यापन कर सकता है तथा साथ ही मरने के बाद मोक्ष प्राप्त भी। जन्मजात ढोंगी, तपस्वी, विविध दैवयो, जोगनियां, भैरू आदि जीवित या अन्य किसी छाया-प्रेतादि आत्मा का जप कभी नहीं करना चाहिए।

29 नियम शील

उदयराज खिलेरी, बाड़मेर

मानव जीवन में शील महा व्रत का बहुत महत्व है। वैसे शील शब्द के प्रसंगानुसार कई अर्थ निकलते हैं। मगर उन्नतीस नियमों में जो शील शब्द का प्रयोग हुआ है, इसका अर्थ है पुरुष के लिए पत्नी व्रत धर्म, महिला के लिए पति व्रत धर्म तथा कुंवारे एवं विदुर-विधवा के लिए ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करना शील व्रत कहलाता है। व्यक्ति को शील व्रतानुरागी बनने के लिए अपनी भावना को सत्वगुणी बनानी चाहिए। मन में शुभ संकल्पों का धारण करते हुए राग-द्वैष से निरपेक्ष रहने का अभ्यास करते रहना चाहिए। अपने कर्तव्य का ठीक ढंग से निर्वाह करना ही शील धर्म है।

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता, मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।

(भृतहरि नीति शतक)

जो व्यक्ति विद्वान नहीं है, तपस्वी नहीं, दानी, ज्ञानी व गुणी नहीं है, शील व्रत का आचरण नहीं करता है तथा धर्म का आचरण नहीं करता है। वह मनुष्य पृथ्वी पर भार स्वरूप है तथा मनुष्य होते हुए भी पशुवत है।

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो।
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वितस्य पात्रे व्ययः।
अक्रोधस्यसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मरस्य निव्यार्जता।
सर्वेषामपि
सर्वे कारणमिदं शीलं परम् भूषणम्।

(भृतहरि नीति शतक)

- *ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता है। शौर्य का भूषण वाक् संयमता है। ज्ञान का भूषण शान्ति व विनय है। धन की शोभा सूपात्र को दान है। तपस्या का भूषण अक्रोध है।*
- *प्रभूता का भूषण क्षमा है,सब गुणों का भूषण और कारण शील है।*
- *अतः सामाजिक व पारिवारिक मर्यादाओं को बनाए रखने के लिए शील नियम धर्म का पालन जरूरी है। मनुष्य को संयमित जीवन अपनाते हुए पत्नीव्रत धर्म, पतिव्रत धर्म तथा ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करना चाहिए।*

सदस्य बनिए... घर बैठे समराथल न्यूज पोस्ट पढ़िए...

अपने क्षेत्र की सामाजिक, शैक्षणिक, पर्यावरणीय, राजनीतिक व धार्मिक गतिविधियों के समाचार व आलेख समराथल न्यूज पोस्ट तक पहुंचाएं। जरिए वॉट्सएप नंबरः 9166630130 और ईमेलः samrathal.newspost@gmail.com

अपनी खुशी सबके साथ बांटिए। इसमें समराथल न्यूज पोस्ट पत्रिका सहयोगी बनेंगी। किसी बेटे-बेटी ने शिक्षा, खेल, चिकित्सा या विज्ञान के क्षेत्र में नाम रोशन किया हो या किसी ने सफलता की सीढ़ियां चढ़ी हो। यह पूरे समाज के लिए गर्व की बात है। इस गर्व की अनुभूति पूरे समाज को भी हो। फिर देर किस बात की। समराथल न्यूज पोस्ट के जरिए इस खुशी को दोगुना कीजिए। अपने फोटो व प्रमाण पत्र के साथ भेजिए... samrathal.newspost@gmail.com पर।

Under 19 World Cup

जोधपुर. बिरामी गांव के रवि लोळ ने समाज को गर्व के नए पल दिए हैं। वे पहले खिलाड़ी बन गए हैं, जो क्रिकेट के वर्ल्ड कप में भारतीय टीम से खेले हैं। न केवल खेले बल्कि अंडर 19 वर्ल्ड कप में शानदार प्रदर्शन करते हुए सबसे ज्यादा 17 विकेट लिए। उनके पिता मांगीलाल विश्नोई शिक्षक हैं। सामान्य परिवार से निकली प्रतिभा ने दुनिया में भारत का नाम रोशन किया है। अब उनका लक्ष्य सीनियर क्रिकेट टीम में शामिल होना है। फाइनल मुकाबले में बांग्लादेश के खिलाफ 30 रन देकर चार विकेट लिए। उन्होंने इस विश्व कप में 6 मैच खेले। 52 ओवर बॉलिंग में 6 ओवर में कोई रन नहीं दिया। यानी मेडन ओवर निकाले। 52 ओवर में कुल 181 रन दिए लेकिन 17 विकेट चटकाकर विपक्षी टीमों की कमर तोड़ दी। चार-चार विकेट तीन बार लिए।

बिरामी गांव के रवि लोळ ने अंडर 19 क्रिकेट वर्ल्ड कप में झटके 17 विकेट, 4 विकेट 3 बार

छा गया रवि

रवि अब आगामी महीनों में होने वाली आईपीएल प्रतियोगिता में हिस्सा लेगा। उसे पंजाब की ओर से 2 करोड़ रुपए में खरीदा गया था। आईपीएल में बेहतर प्रदर्शन से उसकी राह सीनियर टीम में आसान हो जाएगी। क्रिकेट विशेषज्ञ उसे दूसरे कुंबले की संज्ञा दे रहे हैं। रवि की गुगली को बड़े क्रिकेटर भी गच्चा खा जाते हैं। वर्ल्ड कप में हिस्सा लेकर लौटे रवि का गांव पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया। घर पहुंचे तो पूरे परिवार की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। खासकर दादी ने कहा कि रवि ने मेरी उम्र बढ़ा दी है। वह खुशी से बार-बार रवि को चूम रही थीं। रवि फिल्म अभिनेता शाहरूख खान के फैन भी हैं। उनके घर का नाम भी मन्नत है। पिता मांगीलाल बताते हैं कि उसे रवि की प्रतिभा पर पूरा भरोसा था। वह कड़ी मेहनत करता रहा है।

आईपीएल में किंग्स इलेवन पंजाब की ओर से खेलेंगे, भविष्य में सीनियर टीम में आने का सपना

RNI. भारत सरकार द्वारा पंजीकृत संख्या **RAJMUL/2016/70544**

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO

समराथल न्यूज पोस्ट | कार्यालयः प्लॉट नं. 30, थोरियों की ढाणी, पाल बालाजी, पाल रोड, जोधपुर राजस्थान

To, ...

Village...

Post...

Dist..................................Pin...............................